

DPN 6583

सहाभारतकोकथा MAHĀBHĀRATAKO KATHĀ

Title :

Run. No. 7308

Cat. No.

Micro. No.

Subject Story

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 25.5 x 12

Folios 12
missing 1-2
Chapt. 7 act /

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / One side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio 3. - भिमस्यत उवाच ॥ जलौघमगगम चरा चरा घरा विषान P.T.O.

कोत्याषिर वीश्व मूर्तिना ॥ समुद्र तायेन वराह रूपिना भवये स्वयेभु
भगवान प्रसीदतु ॥ ६ ॥ जलमा भगवन् भै चर अचर भयाका
प्रानि पुरुष भै रहन्या वीश्व रूप मूर्ति अथाह भयाका फेरि
पृथ्वीका भार वराह रूप भै आत्मा हातमा धान्याका येसता
तरहका भगवानहो मडोखि प्रसन्न भै जावुस भानि भिम-
सेनले वींति गदरि भया ॥

अथाकावशकावशजलो आवाकायसार्वाङ्गकाचरुक्रमलसामैले तसका
छुभतिराजागुधीछिरलेविनिगर्जभावा ॥ ॥ भिमसार्डवाच ॥ जलोद्यमेग
गतचराचरुयविवातकोयाछिरवीथ्वसूतिता ॥ समुद्रुतायेनवरुह
पितामहेनयेभुभगवात्पुनीडतु ॥ ६ ॥ जलोसामगतभैचराचरुअथाका
प्रातिपुदुषभैरुहवावीथ्वदुषसूतिअथाहभवाकाफेरिपृथ्वीकाभावरुह
दुषभैआकाशतमाधावाकापेसकावरुहकाभगवातलेसडेविपुसंतभैगावस
भतिभिमसेतलेवीतिंगर्जभावा ॥ ॥ अर्जुनडवाच ॥ अचिंतमयक्तमंतम
येपंविभुप्रभूकारिरभूतमाविता ॥ गेलोक्यवीसाएवीचाएकंहरिप्रपतो

॥३॥ निगमिर्महात्मना ॥३॥ चीर्गाहसकवाभयक्रुवाभतं प्रभयं ये एभुताका
 सदिहृदाजैकोक्रेमावासा एवीचा एकरगर्वा निगमि कनवागिडीया येसा
 हृदि कृतमस्का एगर्हुमभित्तिभुर्गुनिगमिभया ॥ ॥ सकलडेवाच ॥
 पेडीगमत्रमधमगलजानुपासाय धं ॥ पेडिचक्रनवीहिनेजायेनेपदेष्ट
 टे ॥ हृदिमिसवमपिगवागहु ॥ आभातराभाभयगोमममहुम्यो केमवेभकी रेका
 ॥८॥ क्रौंवेनामाकालकापासोनेवावी आक्रुकलयेपंधि कीलपतगक्रा
 जोरिकागमक्रु उपर्जमासयेवा एकीमिभये एममलिउपममाये एआका
 भित्त एकाएगुक्रुवभै एहंमाक्रमवकाभकी माप्रकृष्टाएपगीरवीमिभ

कीमावमसकोमभतिरुलनेविनिगमभया ॥ ॥ सहडेवडेवाच ॥ तमेजडाव
 हृदयेवालो एतु एनेमसाः प्रणासयेपिदुर्वतिनेषामपित मोरम् ॥ ॥ नशमा
 वएदुमभारिभानु एनेमगहिवजावीलुक्रुनयेप्रातिले मस्का एगहिकुत्रहं
 यावेसात एका माहावीदुमुक्रुमनेनेवा एका मस्का एभित्तिसहडेवनेवावी
 गमभया ॥ ॥ क्रुंयुवाच ॥ म्चकर्मकलनिहृत्वा पांयांयातिप्रजामेह ॥ तमा
 गमाही विदेमत्वपिभुकी हृतात्मने ॥१०॥ आक्रुकर्मक्राकलनीचा एक्रु
 रगुतगोमिमाहासिजाउपर्जयेनमागलानमावेनामाहृदेमवगीमा
 भकी मे एचीमहुध भयागावमभतिरुमिलेविनिगमभया ॥ ॥

30

25

15

10

5

॥४॥

माडी ड बाच ॥ कृष्णैरुका कृष्णममगुम्मां नि एगोचरुम पुनदृषीताय ॥ तेभिं नडे हापु
 वीमि कृष्ण हरि र्यथा मत्र कृत कृताक्षे ॥ ११ ॥ वडो मत्र भैकन कृष्ण भनि मत्रु खेले मम
 एग गच्छे वृणी मा सुति गामा वरि ड थ ड मा प रि कृष्ण हृ हृ भ भनी मम एग ग र्या का डे
 हृ हृ हृ म का डे हृ नि न कृ डे न क म्भो भ म्भो हो म ग र्ज मा कृ हि स वै आ गे ले प ची मिलिः
 जा धं एः तसे कृष्ण का डे हृ सी त मिलि जा ध भ नि मा डी ले वी ति ग र्ज भ म्भो ॥ ॥
 डो प छे ड बाच ॥ की ते सु प धे सु म्भे सु म रि सु पे सु र धे पि मा स च म उ जे वो पि ये न
 तत्र ॥ जा त म्भे भ व ग के स व च भ मा ड त्व जे व भ क र च ए व भि चा रि ति च ॥ २ ॥
 की त म त ग ए प ल पं धि मृ ग म र्प आ दि पि मा च म नु ष्य ले जा म पि ड डी ड मा ज म

लिउ प र्ज मा हे के स व मे र म रि भि त रि म्भो कृ पाले यु क्त भ या का ति म्भो अ च र भ की क र
 भ नि चार ग चा प रि के ले उ दु गो म भ नि डो प रि ले वी ति ग र्ज भ म्भो ॥ ॥ सु म डो वा च ॥
 ये को पि कृष्ण म्भो त प्र ए ग मि ड मा सो मे धी न व भु ये न तु न्या ॥ ड मा म्भे म धी पु न रे ति
 म्भो हृ हृ प्र मा मि न पु न र भ वा ये ॥ १३ ॥ सु म ड ले क ह थिं न ये क ये र भी कृष्ण ला ह
 प्र मा म ग र्या को र ड म प ल भ म्भे मे ध ज गे ग र्या को ये के हो त र भ म्भे मे ध ज गे ग र्या
 का ले के रि के रि म्भो म लि उ प ध भी कृष्ण ला ह प्र मा म ग र्या ले के रि म्भो लि उ प र्ज ॥
 ॥ भ नि म्भे च दु वा च ॥ गो वी ड गो वी ड ह रे म्भो ले गो वी ड गो वी ड मु क्क ड कृष्ण ॥ गो
 वी ड गो वी ड ए था य पा न गो वी ड गो वी ड न मा मि नी यं ॥ १४ ॥ भ नि म्भे ले वी ति ग
 र्ज हे गो वी ड हे ह रे हे म्भो रे हे मु क्क र हे कृष्ण हे च कृ प रि ये म्भो न मा व लि ग ले कृष्ण

30

25

15

10

5

॥५॥

उत्तरार्द्ध नद्यादि ॥ ॥ धृष्टप्रसूतवाच ॥ श्रीरामनारायणवासुदेवगोपीडवैकुण्ठसु
कुण्डल ॥ श्रीकेशवानंतमैकुण्डकृष्णमाताहिसंसारभुजगदीहारं ॥ ॥ धृ
ष्टप्रसूतेवितिगर्हहेरामहेनारयेनहेवासुदेवहेगोपीडहेवैकुण्ठहेकृष्णहेकेशवहेअ
नंतहेनारीहहेसुकुण्डहेकृष्णसंसारं निभानसर्पलेवसाकामलाहिरुद्रागरं ॥ ॥
सायक्यवाच ॥ अप्रमेयेहरेवीक्ष्यकृष्णमोडराय्यतु ॥ गोपीडानतसर्वलवासुदेव
नमस्तुते ॥ १६ ॥ सायकिलेवीतिगर्जभयाजसक्रोप्रणाप्रद्यैतहहरेहवीक्ष्यमोडमो
डहकृष्णहेअय्यतहेगोपीडहेअनंतहेसर्वलहजलार्हमेऐप्रणामद्यभतिताये
किलेवीतिगर्जभया ॥ ॥ ॥ ३ धवईवाच ॥ वासुदेवपरिषेपेयोनिडेयंसुधात्मने

॥ तृषिताजाकुवीतिरेकूपयगतिदुमर्ति ॥ १७ ॥ वासुदेवलाईद्योडीअडडेवनाकोभज
रुगर्दनगोपाकानिरुमातुसालाम्यालेकुवायचाजसोहो ॥ ॥ धोम्यईवाचा ॥
अपासमिषेसयेनासनेगुहेडिकाचरागौचपथाधिगदुगा ॥ येदसीकीची
तमुकीरुक्तमयाजगडरमेनकमेनगुय्यतु ॥ १८ ॥ धोम्यईवाचरुंजलमा
सथलमाडीयसमाएगीमाहीडडामांलेगयाकामुकर्मलेभगवाउप्रस
नकुदु ॥ ॥ आनारिषुनामिथिवासचभीनाद्योरेषुवाद्याडीषुवर्त
मागा ॥ संकिर्तिगएयेनसवडमागविमुक्तदुषासुसिनेभवंति ॥ १९ ॥ वि
भमयाकामावतवीसेध्याद्योराआदिनेदुकाकाविषेगाएयेनकोगामुक्ते

30

25

15

नैगर्दे मा सुहोई जाह ॥ ॥ अकलई वाच ॥ अहं हि गरायेन डाम डाम डाम म्येडा
॥ ६ ॥ मेमिहि डाम दाम ॥ अयोर्दे सो डाम को गरा गरा ममाधं धं पतरे सिनोके ॥ २० ॥
अकल कहं धि ॥ जो गरायेन को दाम धं तन को डाम को पति म दाम कुं धं तर अ म भडा
धं ये छु ॥ ॥ वीर नई वाच ॥ वासुडेय म्ये भक्ता सांता तन गत मान सा ॥ तेषा डा
म्ये डा सो हं भवेत मनिज मति ॥ २१ ॥ वासुडेव को जो भक्त छु तन को डाम को पति
डाम तन मज म विषे म कुं धं ॥ ॥ भीष्म ई वाच ॥ वीये रि ते सु काले सु पीरि दि ऐ
सु पं धु सु ॥ गहि मा कये वा क ह म म रा क प व स ल ॥ २२ ॥ सकल प चा मा वा ध
व न क भया मा हे क दु गति धान म रं प चा का म ल ई र धा गर ॥ ॥ डो न ई

10

5

वाच ॥ ये ये ह का च क धरे न डे का म जे लोक मथे न जग ई रे न ॥ ते ते मृता वी ह म पुरि प्रया
ता को धे पि डे व म्ये वरे ए तु न्यं ॥ २३ ॥ हे म व च क ग ड प म धा या का जे लोक ना थ जग
ई न ले जो जो रा हें न मा हें ए म पुरा वी ह म पुरि मा जा हें ए श्री भगवान् को रि म प
ति व र डाम तु न्यं कुं धं ॥ ॥ कृपा चार्जे ई वा च ॥ मज म फल मिई म धु के ट मो र म
प्रा र्थि म्ये म ड ग म ह दे व ये व ल ड म भु ये परि चार क भु य भु य भु य म्ये भु ये ई
ति मा म मा थ लो क म थ ॥ २४ ॥ कृपा चार्जे ले वी गि ग हें न म र ज म को फल
मे ले प्रा र्थि गग या को पति हे म धु के ट मो म की वे ह ग को कृपा पति म ल ई डा
गु ह व म ॥ ॥ धु श्व लामा वा च ॥ गो वी ड के स व ड जे ई न वासु डे व वि म्भे न वी

[illegible]

ति प्राचर नारदीय को भक्ती गद्य तस्य अर्थ भूषण भाव कथागर ॥ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ नमो
नमकार नवाम नाये नाराये नायी मित्री वीरु माय ॥ श्री साग चक्रा सिगदा धरा ये रामो स्तु
स्तु स्तु पुद्गल माये ॥ २१ ॥ देवता का कारण मावाम न भवतार नया का पराक्रम को ले
बान भया का का सिव चक्र गदा पद्म धाया का ये स्ता पुद्गल माये नमस्तु गद्य ॥ ॥
गंधार्जुन उवाच ॥ त्वमेव माता पिता त्वमेव त्वमेव वंधु स्वसखा त्वमेव ॥ त्वमेव वीर आर्य
न त्वमेव त्वमेव वंधुश्च स्वसखा त्वमेव ॥ २८ ॥ हे नारद येन मेरा माता पिता भला तिमि हो
सगी पति तिमि हो दाजु भाई पति तिमि हो उध पति तिमि हो तिमि देखि जो ओ को हो
देन ॥ ॥ द्रुपद उवाच ॥ येन साधु तगो वीरु माधवान त के लय ॥ कृष्ण वीरु मोह

धीकेलवासुदेवनमोस्तुते ॥२९॥ हेमालहेअच्युतहेषाउहेमाधपहेअनतहेकेलवहेकुदमहेहृषि
 केमहेवादेवतिमिताहनमस्कारह ॥ ॥ जयेउवाच ॥ नमस्तुभ्यायेदेवायेब्रह्मनेनतस
 ॥६॥ ॥ योगीश्वरायेयोगायेवापहं सरनागत ॥३०॥ कुरुभनामभयाकाब्रह्माकादृपधामा
 काभनतलकीभयाकायोगपथरभयाकायोगदृपभयाकापेसाहजरकासरनारमाभा
 याकाह ॥ ॥ कुरुउवाच ॥ कुरुभ्यायेवासुदेवायेदेवकीननुनायच ॥ ननुगोपकमोराय
 गोपीडायेनमोनम ॥३१॥ कुरुभलाहवासुदेवलाहदेवकीननुनलाह ॥ ननुकोपकमारलाहगो
 पीदलाह नममकारह ॥ ॥ सोमउवाच ॥ नमस्तुभ्यायेदेवायेब्रह्मनेनतस
 न ॥ वासुदेवायेसांतायेपदुतापतयेनम ॥३२॥ पामकल्यानश्चदृपभयाकासि
 तारलेभायनागरिरावेकावासुदेवकापतसांनश्चदृपभयाकापदुक्लकापनिभ

याकापेसासागानकननमहाकाह ॥ ॥ वीरउवाच ॥ नमोब्रह्मन्यदेवायेगोब्राह्मण
 हितयेच ॥ जगत्त्रिनायेकुरुभ्यायेगोपीडायेनमोनम ॥३३॥ गोब्राह्मणकोहितगर्चा
 मस्तारकोहितगर्चापेसाकुरुभलाहप्रनामह ॥ ॥ ननुउवाच ॥ अतसीपुष्पस
 कामपितवाससमुच्युत ॥ येनमस्यांतीगोपीदुनेनेवापीछानेभयेम ॥३४॥ अतसीपु
 लहेस्यावरुभयाकापिताम्बरपेहाकाकीकुरुभलाहमेराप्रणामह ॥ जमलेनारुप
 नकनप्रनामगर्हगतलाहकनेउविभयेहुंतेन ॥ ॥ वलभउवाच ॥ कुरुभकुरुभ
 भयालोचमगतिनागतिभव ॥ तसारुनवममानाप्रसीधपुदुवोनम ॥३५॥
 हेकुरुभकुरुभगतिध्याननसारदुपिसमुदमादुध्याकामलाहप्रसन्नकुरुभ

30

25

15

10

5

॥ श्रीगणेश उवाच ॥ कुरु कुरु मे निरुद्ध मे प्रोमास मरुत नीयसं ॥ जलमित्रा येथापश
नरका दुधर म्पहं ॥ ३६ ॥ श्रीगणेश उवाच ॥ न कुरु कुरु भनि मलाहं जमलेम
॥ ३७ ॥ मरण गहं न नामलाहं जमो जलदेवि कमलका कुल इजं हं तस्मै नरक देवि इधार गहं
॥ ॥ सत्येव वीमि प्रनृता स्वयं मुदं वा कुर्यो मा मुकुड नर सिह जना इनेति ॥ ३८ ॥ जी
वन जप पय नृदिनं मरुते नृवा पाषात का कुरु साहसं प्रददा मि मित्रं ॥ ३९ ॥ आफे भ
गवानले आशा गहं न जमले मलाहं नर सीह मुकुड जना इव भनि ममरुता गहं न
पत्नर काहं देह भया पतिनामलाहं भनि प्रसिधी कुरु ॥ ॥ इधर उवाच ॥
मरुता रायेने मुक्ता पुमान कल्पे सतत यं ॥ गंगा इति सर्व तिथे वृक्षातो भयति प्र
गक ॥ ३८ ॥ येन कुरु भया पतिना रायेने को ताम इधर गहं न तिन स येत्य पत्ने

त गंगा इति तिथे विषे ज्ञान गचा को कुरु मितर ह ॥ ॥ सूत उवाच ॥ तत्रैव गं
गा ये मुना च तत्र गो जावलि सिंधु सरथ तिच ॥ सर्वाति तिथि विवसति तत्र य
गा चिको डारु धा प्रसंग ॥ ३९ ॥ सूत पौराणीक आशा गहं नृता हा श्रीगणेश को
कथा कुरु नाहा गं गा जमलाहं सरथ तिध पाडी तिथि ममुद स्नेत भैक न आशये
न हं न ॥ ॥ येमरा उवाच ॥ नर के पथ्ये मानेन येमेन परिभाषितं ॥ क्रियं
या नाची को देव के संवके सगसक ॥ ४० ॥ येमरा जाले आग्ना गहं आक्रु फर्म
विषे नरक वीषे पाक या आशी करे संपुर्ण दुषकन ता सगया नाए येन कवका
भजन गहं न थ्यो भति वृद्धा इह नम ॥ ॥ नार उवाच ॥ भज मातर सह भैक न
पोथ्या मसमाधी नागे नर नाहि तपायाना कुरु मे भकी प्रजापते ॥ ४१ ॥ नार

कंहं धितु मनुष्ये कोडेह पाया मा जमजमवीलेन पाया ध्यात गज माभीक्ष्ण्य वीषे
 भक्ती यथा इच्छेत् ॥ प्रह्लाद उवाच ॥ नाथ पोनिम ह लेख येव येव प्रजा मही ॥
 ॥ ४० ॥ ते सुते स्वचरि भक्ती रया नास्मात्त शक्यं ॥ ४१ ॥ प्रह्लाद उवाच ॥ गद्गद् गौ ना २ गो
 विमा मजा लात व २ गो विमा भक्ती न ह तम ॥ ॥ या प्रती एषीषे क्राना वीष ये स न
 पायी नी ॥ वाम न स्मरति सा मे ह ५ या ना पत्नी रयेत् ॥ ४२ ॥ ये सो अर्वा वेकी ला
 ६ वीष ये डे वि डो मा म न जा डे न तमि मि मि ला ६ स म कुं ग मा न र ह म डो र जगा
 मा न जा य स ॥ ॥ वीष्वा मि त उवाच ॥ की न मे ज ते कि र ति र्थे की न गो नि
 की म ध्य र ॥ यो नि त्थे ध्य र ये ते देव ता ए य न म न वि धी ॥ ४४ ॥ वीष्वा मि त

कंहं ६ ॥ जस ले ना ए ये न भक्ती ये क न्व ग रि गद्ग मे स ले संपूर्ण डान प नि ग चो ति
 र्थ प नि ग चो त प म्मा प नि ग चो भ नि जा त ॥ ॥ ये म ड्गी रु वा च ॥ ती न्यो ना म
 व भवो ये का नि न्ये भी ती न्ये म ग न्त् ॥ ये वा हु दि स्थो भा ग वा न म ग ला ये त ने ह
 रि ॥ ४५ ॥ म ग ल का ध र भ या का भा ग वा न ज स्का ही ड ये मा ह्नु त स्का ध र वी षे
 नि मे मं ग ल प रि कृ ष्ण ॥ ॥ भा र द्वा ज उ वा च ॥ ना भ स्ते वा ज ये म ये वा क
 त स गे प प र ज ये ॥ ये वा मि डी व र्मा मो हु ड ये र्थो ज ग ड्ग ॥ ४६ ॥ ज स्का ही
 ड य वी नि ल क म ल ज म्मा ह्मा म व र्ण भ या का ज ग ड्ग न ह्नु न ग त ला ह्मा म प नि कृ ष्ण
 म क्रो प र ज ये प नि क्रे ले प नि कृ डे न ॥ ॥ गो त म ड्ग वा च ॥ जा के दि ड ग य
 ह ते व क्रा सि प्र या म ग ना ड क क ल य वा हि ये शा पु तं मे ह्नु न व र्ण डान गो वी ड ना

॥११॥ गोपी गार्ड डन गचा को गृह न वीषे का सी गंगा स्नात गचा
 को अयुत नृग पर्वत प्रपात गंगा मा वास गचा को सुमेध पर्वत जगो थुप्र सुर्वरा
 डन गचा को गोपी डको नाम सुमरा गचा को वरुण कृत कृद ॥ ॥ अग्नी
 वाच ॥ गोपी डेति सप्तमान गोपी डेती सप्तम ॥ गोपी डेति सप्तम न सप्तम
 वी डको कृत ॥ ४८ ॥ सप्तमान भरी गोपी डको नाम हो सप्तम नृप नृपति गो
 पी डको नाम हो सप्तम नृपति गोपी डको नाम हो द्विती नृपति गोपी डको गडी
 ॥ अक्षर पुत्र नृप गोपी डेति द्वापद ॥ तस्माद्वरित येन प्रजा भया यक
 तपते ॥ ४९ ॥ गोपी ड भया भूति नृपतं प्रजा कृतः जलने डं धातु गदं यो धम हो गद

श्री वाड द्वाच ॥ अचूत कृत्ये वृक्षो संभूत कामधेनव ॥ चीनामनिश्च गोपी डो हरि
 नाम विचीनेय ॥ ५० ॥ कृत्य वृक्ष भयाका अचूत कृत्य कामधेनव भयाका संभूत
 कृत्य चीनामनिश्च भयाका गोपी डं नृप नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति ॥ ॥ हरि
 द्वाच ॥ जय नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति
 ॥ जय नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति ॥ ५१ ॥
 डवका नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति
 डवका नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति
 कामार को नाम गन्तु मुकुट सवेर्भ डवका ॥ ॥ जीपता येनि डं वाच ॥

॥ श्रीमंतीसिंहविभवेगदुडकोनायेतापगयोपिसमनायमवौवधाये ॥ रुद्रायेष्ट
 ॥ ५२ ॥ श्रीकृष्णनाम्नीभुजगतेगकेसवपायहरयेगुदुवेनमस्मि ॥ ५२ ॥ लक्ष्मनयुक्तमपा
 कानुसिंहदुपधायाकाहेथज्यदुपमपाकाहेगदुडवाहनसंसारकृतिनापदुषा
 नागगर्भाधौवधीमपाकायेसाभगवानलेवीदिडेधिजगडेधिसर्पडेधिरुग
 डेधिकेसमपाकाहोकदुषडेधिनरुधागर्वायेसाहरिनाहेनमकारधुन
 ॥ ॥ हरिहोत्रेईवाच ॥ रुद्रभावडिपेवडपंकमपिंजएतेअधेवसावित्तग
 मातसरुजहंस ॥ प्राणप्रियानसमयेकफुवागवित्रैकंठावएधरवोसमान
 कृत्तमे ॥ ५३ ॥ हेरुद्रातप्रापाडदुपिपितएवीधेआजेवसेसप्राणकोप्र
 वानमपाकोजागाहुजमानमोवमानाकाहासकौना ॥ ॥ वीरुवाच ॥

हरिनामैवनामैवनामैवममंतिवनेमैकनौनासैवतसैवनासैवगतिरंधा ॥ ५४ ॥ ह
 रीकानामडेधिअकोतिववीत्येवगरिकलिजुगवीधेअक्रोगतीधैत ॥ ॥ वसीयुड
 वाच ॥ रुद्रनेमिसगलनामयेत्येवाचिप्रवर्तते ॥ ममीभवंतुगत्याभुमाहा
 पाठककोटये ॥ ५५ ॥ रुद्रमपासंगलनामजस्कावचनलेनिधेनस्काको
 दीपायतक्षुणैमामदुधन ॥ ॥ अदुधयुवाच ॥ रुद्रायेवासुडेवायेहरये
 पामाम ॥ प्राणवक्तसनासायेगोपीरायेनमोनम ॥ ५६ ॥ अदुधयुलेवीति
 गहैरुद्रहलेनाहेनमसकारधुवासुडेवलाहेनमकारधुहरिनाहेपामाम
 लाहेनमकारधुआक्राभंऊजेनकादुषनामगर्वालाहेनमकारधु ॥ ॥
 कायेईवाच ॥ रुद्रानुमानाडेववापसघाटपज ॥ सतधाभेदमा

30

25

15

10

5

जा
॥१३॥

प्रोतिगीहिवर्जहोयेधाम॥५॥ सुहृन्नाहसमकृतावीतिनेपापसमुदा-
येकापिजहनासंगयादिदु कलामभावावजुलेपर्वकानासगयादे॥ ॥
हुयेधिवर्जवाच॥ गगामिधर्मनयेमेप्रसूतीजागामीपायंनयमेवृषी-
ती॥ कृगपीडेवेनहीसीसधीतेनवेथानियेकोस्थितथाकरोति॥५८॥
योधर्महोभतिजाडेनयोपापहोननिजाडेनमेराहीडेवीधेंएहाका-
त्वामितेजसोन्नगाडेनतसैगर्दन॥ ॥येतसगुणजेसेनक्षमभा-
मधसुडन॥ अहमेवमहंहनुममडेवोनहिपेये॥५९॥ हेमसुडनसं-
लाएदुपियेगवीषेपत्थाकासेनाहएक्षारआफेलाहआफेलेमायासिलग-
पावहहिडेड॥ ॥गुगुदवाच॥ तामेयतवगावीहनामगवमनाधी

३१
॥१३॥

कं॥ इहायुधार्नामुकीभवानसामयोगग॥६०॥ हेगोवीडअसुगजोगग-
हिपाडेयामुकीकनतसामासमात्रेलेदिह॥ लोमसोडेवाच॥ वसामी-
नारेयेनपादुपंकजकरोमिनाएयेनपूजनसडा॥ वगसिनाएयेन-
नामनिर्मलसमरागिनाएयेनभवमध्ययं॥६१॥ नारायेनक्राचएना-
एवीडवाएकनपुनांसगर्हिनाएयेनकोनामलिहं नाएयेनक्रागलकन-
समहिह॥ ॥ लोनकडेवाच॥ स्मृतेसकलकल्यानभोजनयजंजायते॥ पुदुवस-
सतंभंजयनित्यंजुजामिसहनहरि॥६२॥ जकोनामसमदुंदेमासकलक-
ल्यानवंदहुनयेसापुदुकोतेमनारायेनकासरनमाजहु॥ ॥ गार्पडेवा-
च॥ नारायेनेतिमत्रैषंवीगसिबसवतिनि॥ लथापिनकेधारेवतंतिथपुतम

30

25

15

10

5

॥ १७४ ॥ हत ॥ ६३ ॥ नाएयनभयापोमत्रहंदाहंहेमावचनआक्रापसंघंदाहंहेमातेप
तिनाएकवासपदंनयोवडोअजभुतह ॥ ॥ डालभ्यर्द्धवाच ॥ किरास्यवकुमि
मैत्रैर्भक्तिर्यस्यजनाउने ॥ नमोनाएयनायेतिमत्रसर्वार्थसिधयेत् ॥ ६४ ॥
जस्काशीकृद्वनवीवेभक्तीहृतसन्वाहंअमुमंत्रक्याचाहिह ॥ वेसपायनड
वाच ॥ येजयोगेश्वरंकृद्वनोपत्रपाथोधनुरधर ॥ तजशीवीजयोभूमी
कवानितिर्मतिर्मम ॥ ६५ ॥ ग्राहजोगेश्वरश्रीकृद्वनं हृतहाजयेकृद्वग्राहा
धनुवधाहिरगुनहंलक्ष्मीपतिताहिरहं ॥ अग्नीदुवाच ॥ हरिरह
एतिपापानादुखचिंतैरपिसमृत ॥ अनिहंयापिसशेषादहतेवहीपा

पां
॥ १७४ ॥